

**गज़ल:**

कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है,  
मगर धरती पर मैं तुझसे दूर कैसे हूँ, तू मुझसे दूर कैसी है।

पुकारे आँख में चढ़कर, तो खू को खू,  
पुकारे आँख में चढ़कर, तो खू को खू।

अंधेरा किसको कहते हैं, जुगनू बस समझता है,  
हमें तो चाँद तारों में भी, तेरा रूप दिखता है।  
मोहब्बत की नुमाइश को, अदाएं तू समझता है,

मोहब्बत एक एहसासों की, पावन सी कहानी है।

कभी कबीरा दीवाना था, कभी मीरा दीवानी थी,  
यहाँ सब Log कहते हैं मेरी आँखों में, आंसू हैं।  
तू समझे तो मोती हैं, जो ना समझे तो paani hai,

जवानी में कई गज़लें, अधूरी छूट जाती हैं,  
दिल ही दिल में कई ख्वाहिशें, पूरी छूट जाती हैं।

जुदाई में मैं उससे, मुकम्मल बात करता हूँ,  
मुलाकातों में सारी बातें, अधूरी छूट जाती हैं।

पुरानी दोस्ती को इस नई ताकत से मत तोलो,  
संबंधों की तुरपाई है, षडयंत्र से मत खोलो।

मेरे लहजे की छैनी से, गढ़े कुछ देवता,  
जो कल मेरे लफ्ज़ों पर, मरते थे, अब कहते हैं मत बोलो।

जो मैं या तुम समझ ले, वो इशारा कर लिया mene,  
भरोसा बस तुम्हारा था, तुम्हारा कर लिया मैंने।  
लहर है, हौसला है, रब है, हिम्मत है, दुआएं हैं,  
किनारा करने वालों से, किनारा कर लिया मैंने।

**गज़ल:**

मैं अपनी गीत गज़लों से उसे पैगाम करता हूँ,  
उसी की दी हुई दौलत उसी के नाम करता हूँ।

हवा का काम है चलना, दिए का काम है जलना,  
वो अपना काम करती है, मैं अपना काम करता हूँ।

किसी के दिल की मौसी जहाँ से होकर गुज़री है,  
हमारी सारी चालाकी वहीं पर खोके गुज़री है।  
तुम्हारी और मेरी रात में बस फर्क है इतना,  
तुम्हारी है सोकर गुज़री है, हमारी रोककर गुज़री है।

नज़र अक्सर शिकायत आजकल करती है दर्पण से,  
थकान भी चुटकियाँ लेने लगी है तन से और मन से।  
कहाँ तक हम संभाले उम्र का रोज़ गिरता गढ़,  
तुम अपनी याद का मलवा हटाओ दिल के आँगन से।

कहीं पर जाग लिए तुम बिन, कहीं पर सो लिए तुम बिन,  
भरी महफ़िल में भी अक्सर अकेले हो लिए तुम बिन।  
ये पिछले चंद वर्षों की कमाई साथ है मेरे,  
कभी तो हंस लिए तुम बिन, कभी तो रो लिए तुम बिन।

जागा हर दिन सिसकना है, जहाँ हर रात गाना है,  
हमारी ज़िन्दगी भी इक तवायफ़ का घराना है।  
बहुत मजबूर होकर गीत रोटी के लिखे मैंने,  
तुम्हारी याद का क्या है, उससे तो रोज़ आना है।

---

### गीतः

ज़ख्म भर जाएंगे, तुम मिलो तो सही,  
दिन संवर जाएंगे, तुम मिलो तो सही,  
रास्ते में खड़े तो अधूरे से हम,  
एक घर जाएंगे, तुम मिलो तो सही।

ज़ख्म इतने मिले फिर सिले ही नहीं,  
दीप ऐसे बुझें फिर जले ही नहीं,  
बेकार क़िस्मत रone से क्या फायदा,  
वो आती रही, मिलती रही हम प्यार समझ बैठे,  
एक दिन वो भी आई, हम रविवार समझ बैठे।  
बेकार क़िस्मत पे रone से क्या फायदा,  
सोच लेना हम तुम मिले ही नहीं।

के वक्त के करोड़ शाल का भरोसा नहीं,  
आज जी लो के कल का भरोसा नहीं।  
दे रहे हैं वो अगले जन्म की खबर,  
जिनको अगले ही पल का भरोसा नहीं।

